

॥ डोंगरगढ़ तीर्थ महिमा एवं धर्म ज्ञान ॥

माँ बम्लेश्वरी देवी का ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक परिचय

१. माँ बम्लेश्वरी मंदिर का पौराणिक इतिहास

डोंगरगढ़ का प्राचीन नाम **कामाख्या नगरी** था। लगभग 2200 वर्ष पूर्व यहाँ के प्रतापी राजा वीरसेन निःसंतान थे। उन्होंने कुल पुरोहित के मार्गदर्शन में माँ भगवती की घोर तपस्या की और पुत्रेष्टि महायज्ञ का आयोजन किया। माँ की असीम कृपा से उन्हें 'मदनसेन' नामक प्रतापी पुत्र प्राप्त हुआ।

राजा वीरसेन ने भगवती की कृपा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पहाड़ी पर भव्य मंदिर की स्थापना की। पहाड़ी के शीर्ष (लगभग 1600 फीट) पर **बड़ी माँ बम्लेश्वरी** और तलहटी में **छोटी माँ बम्लेश्वरी** की दिव्य प्रतिमा स्थापित है।

२. मनोकामना ज्योति कलश का आध्यात्मिक रहस्य

नवरात्रि (चैत्र एवं क्वारं) के पावन पर्व पर डोंगरगढ़ में लाखों श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु अखंड ज्योति कलश (घी एवं तेल) प्रज्वलित करवाते हैं।

- ज्योति का महत्व:** अग्नि और ज्योति साक्षात् माँ भगवती का चैतन्य स्वरूप मानी जाती हैं। ज्योति कलश जलाने से साधक के घर-परिवार से अज्ञान, दरिद्रता, भय और रोगों का नाश होता है।
- संस्कार व फल:** यह ज्योति 9 दिनों तक अखंड रूप से जलती है, जिससे साधक के मनोरथ सिद्ध होते हैं और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

३. तीर्थ यात्रा एवं दर्शन के सामान्य नियम

- पहाड़ी पर स्थित मंदिर तक जाने के लिए लगभग 1000 सीढ़ियों का मार्ग अथवा आधुनिक रोपवे (Ropeway) सुविधा उपलब्ध है।
- मंदिर परिसर की पवित्रता बनाए रखें और कतारबद्ध होकर शांतिपूर्वक दर्शन लाभ प्राप्त करें।

माँ बम्लेश्वरी देवी मंदिर ट्रस्ट, डोंगरगढ़ (राजनांदगांव, छत्तीसगढ़) — आधिकारिक वेबसाइट डाउनलोड प्रति